P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तराखण्ड राज्य में महिला चिकित्सा सुविधा : तुलनात्मक अध्ययन (जनपद पौड़ी एवं हरिद्वार)

भारती थापा
शोध छात्रा,
राजनीति विज्ञान विभाग,
हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

सी.एस.सूद
पर्यावेक्षक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

सारांश

एक कहावत हैं कि स्वस्थ्य ही पूंजी हैं किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए व जीवन में आगे बढ़ने के लिए शारीरिक व मानसिक दोनो तरह से मजबूत व स्वस्थ्य होना आवश्यक हैं ओर यह कथन महिलाओं पर भी पूरी तरह से लागू होता हैं क्योंकि महिलाएं ही देश के भावी नागरिको को जन्म देती हैं। अतः महिलाओं का शारीरिक रूप से स्वस्थ्य होना आवश्यक है। क्यांकि एक स्वास्थ्य महिला ही स्वास्थ्य सन्तान को जन्म दे सकती है जो देश का भविष्य की दशा व दिशा को बनाता हैं। महिलाएं अधिक स्वास्थ्य तभी हो पायेगी जब उन्हे समय पर उचित उपचार व जानकारी मिलेगी। महिलाऐ अपने दैनिक जीवन का ज्यादा समय घर के कार्यो को पूरा करने मे व्यतीत करती हैं ओर सुबह से लेकर देर रात तक घर मे काम करती हैं। बड़ी संख्या में कई महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं वह घर ओर कार्यस्थल दोनो की क्षेत्र में कठिन शारीरिक श्रम करती हैं। महिलाएं घर–गृहस्थी का पूरा काम–काज निपटाने के साथ–साथ राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में खेतों, खलिहानों, कल–कारखानों, दफ्तरों, अस्पतालों में उपयोगी योगदान करती आई हैं। अतः महिलाओं को शारीरिक व मानसिक रुप से स्वच्छ व निर्मल वातावरण देना आवश्यक हैं। जिससे महिलाएं अपनी स्वास्थ्य संबंधी चिन्ताओ से मुक्त होकर अपने परिवार व समाज के लिए कार्य कर सकेगी साथ ही एक अच्छा व सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगी।

मुख्य शब्द : महिलाएं, स्वास्थ्य, सुविधा, चिकित्सा आदि।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड में महिलाओं को पर्वतीय अर्थव्यवस्था की धुरी कहा जाता हैं विषम भौगोलिक परिस्थितियों में जीवन निर्वाह के कारण पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक संघर्षशील रहता हैं। यहां पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में परिश्रम एवं संघर्ष करने की शक्ति अधिक हैं। रोजगार के संसाधनों के अभाव मे पुरूष जहां पलायन करने को विवश हैं, वही परिवार, खेती–बाड़ी ओर समाज की जिम्मेदारियां महिलाओं का निभानी पड़ती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले अधिकांश पुरूषो के पलायन के कारण महिलाओं पर कार्यभार बढ़ गया हैं।[1] अधिक ऊँचाई मे स्थित क्षेत्रों में स्वचछ पानी लाने के लिए महिलाओं को दूर तक जाना पड़ता हैं जिससे वह अपने परिवार के लिए भोजन का प्रबन्ध कर सके। प्रतिदिन के कठिन कार्यो को महिलाएं तभी पूरा कर पायेगी जब वह शारीरिक रूप से स्वस्थ्य होगी। पहाड़ की माटी से बने उसके शरीर में इतनी सक्षमता होती हैं कि भाग्य पर रूदन करने की बजाय वह पूरी सामर्थ्य के साथ न सिर्फ घर–परिवार की जिम्मेदारियां निभाती हैं, बल्कि समाज सेवा, शिक्षा, उद्यम, पर्यावरण जैसे क्षेत्रों मे भी सहभागी बनकर सामाजिक शून्यता को पूर्णता प्रदान करने के प्रयत्न में जुटी नजर आती हैं पर्वतीय क्षेत्रों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की अधिकता भी साबित करती हैं कि कष्ट साध्य जीवन के बावजूद महिलाऐ यहां के समाज को जीवन्त बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रही हैं।[2] उत्तराखण्ड राज्य की महिलाएं सामाजिक मुद्दो व समस्याओं के प्रति अधिक सक्रिय रही हैं। महिलाओं द्वारा समय–समय पर अनेक प्रकार के सामाजिक व पर्यावरण संबंधि आन्दोलन किये जाते रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोधपत्र में उत्तराखण्ड राज्य के दो जनपदो पौड़ी ओर हरिद्वार जनपद का चयन किया गया हैं राज्य के कुल 13 जनपद है। जिन्हें दो मण्डलों

में विभाजित किया गया है; गढ़वाल मण्डल व कुमाऊ मण्डल। जिसमें 7 जिले गढ़वाल मण्डल व 6 जिले कुमाऊँ के अर्न्तगत आते है। शोध पत्र में चयन किये गये दोनो जिले गढ़वाल मण्डल में सम्मिलित हैं।[3] दोनो ही जनपदो की भौगोलिक परिस्थितियाँ विपरित हैं इस तथ्य को ध्यान मे रखकर शोध के लिए एक पर्वतीय व एक मैदानी जनपद का चुनाव किया गया है। पौड़ी जनपद मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्र में आता हैं तो हरिद्वार जनपद मैदानी व समतल क्षेत्र में आता हैं जिससे दोनो विपरित क्षेत्रों मे निवास करने वाली महिलाओ के स्वास्थ्य में उनके निवास क्षेत्र के भौगोलिक परिस्थिति का अध्ययन किया जा सके। पौड़ी नगर वर्ष 1840 से गढ़वाल का जिला मुख्यालय और वर्ष 1969–70 गढ़वाल मण्डल का मुख्यालय बनाया गया हैं। इस जनपद की स्थालाकृति पूर्णरुप से पर्वतीय हैं यह 30^0–8′–59′′ अक्षाशं उत्तर ओर 78^0–49′–8′′ देशान्तर पूर्व में स्थित है।[4] जनपद हरिद्वार का मुख्यालय हरिद्वार में स्थित हैं, जनपद हरिद्वार गंगा नदी के तट पर शिवालिक पर्वत श्रृंखला की तलहटी में 22^0 30′ उत्तरी अक्षांश तथा $78^0$10′ पूर्वी देशान्तर में बसा हुआ हैं। जनपद हरिद्वार देहरादून, मुजफ्फरनगर बिजनौर व पौड़ी जनपद से की सीमाओं से घिरा हुआ हैं।[5] हरिद्वार हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल हैं। गंगा नदी इस जनपद के उत्तरी–पूर्वी भाग से प्रवेश कर पूर्वी सीमा का निर्धारण करती हैं 28 दिसम्बर, 1988 ई0 को इसे उत्तर प्रदेश का एक जनपद बनाया गया। 15 अप्रैल, 1997 को इसे मेरठ मण्डल से पृथक कर सहारनपुर मण्डल में मिला दिया गया। उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण के बाद हरिद्वार जनपद को उत्तराखण्ड राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।[6]

साहित्यावलोकन

डा0 शशिरानी अगवाल की पुस्तक,''स्त्रीः वर्तमान सन्दर्भ में (2005)'' महिलाओं का शारीरिक रूप से स्वास्थ्य होना आवश्यक व महत्वपूर्ण बताया है, क्योंकि महिलाएं द्वारा मातृत्व के पूर्व व पश्चात् शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर ही एक स्वास्थ्य सन्तान को जन्म दे पाया सभंव है। महिलाओं पर परिवार के सभी सदस्यों के देखभाल करने की जिम्मेदारी भी होती हैं अतः महिलाओं को अधिक शारीरिक श्रम करना पड़ता हैं। महिलाओं के पास अपने नीजि जीवन स्वम के लिए समय कि कमी बनी रहती हैं जिस कारण महिलाएं अपनी शारीरिक समस्याओं पर ध्यान नही दे पाती हैं ओर समस्या बढ़ती जाती हैं।

सुनीलकुमार एम कमलापुर ओर सोमनाथ रेड्डी ने शोधपत्र, ''वुमेन हेल्थ इन इडिया : एन ऐनालाइसिस (2013)'', में स्पष्ट कहा है कि भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नही दिया जाता है। अधिकांश भारतीय परिवारों में लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता हैं उन्हे परिवार के लड़कों की अपेक्षा कम सुविधाएं प्रदान कि जाती है तो परिवार पर एक आर्थिक बोझ समझा जाता हैं।

राजेन्द्रर प्रताप गुप्ता ने अपनी पुस्तक, ''हेल्थ केयर रिफोर्म इन इंडिया मेंकिग अप फोर दा लोस्ट डिकेड (2016)'', में कहा है कि भारत में नगरो की अपेक्षा गांवों में रहने वाली महिलाओं के स्वस्थ्य सुविधाओं की कमी ज्यादा हैं। भारत में महिलाऐं स्तन रोग, ऐनिमिया ओर मधुमेंह रोग से ज्यादा सख्या में पीड़ित हैं। महिलाओं में यह रोग तेजी से फैल रहे हैं, जल्द की कुछ न किया गया तो भारत में इन रोग से पीड़ित महिलाओं की सख्या 2035 तक गम्भीर अवस्था में पहुँच जायेगी।

के. पारकवि, ने अपने शोधपत्र ''मीडिया एड वुमेंन हेल्थ इन इड़िया (2016)'' में कहा है कि महिलाओं में स्वास्थ्य की जानकारी कम है ओर कम जानकारी के कारण प्रत्येक वर्ष बड़ी सख्या में महिलाओं की मृत्यु हो जाती हैं। भारतीय मीडिया महिलाओं को स्वस्थ्य के प्रति जागरुक करने मे सहयोग दे सकता है किन्तु भारतीय मीडिया द्वारा महिला किसी उपयोगी वस्तु की तरह प्रस्तुत किया जाता है जिसका नाकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ रहा हैं। जिस कारण महिलाओं को लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ रही हैं।

डा0 आर, हरिहरन, द्वारा लिखित शोधपत्र, ''हेल्थ स्टेटस आफ वूमेन इन इंडिया : एन ओवरविव आफ लिटरेचर (2016)'', में स्पष्ट कहा है के भारतीय समाज में जैविक, सामाजिक ओर सांस्कृतिक कारको का प्रभाव महिलाओं के स्वस्थ्य पर पड़ता हैं। जिन्हें तोड़ पाना महिलाओं के लिए सभंव नही हो पाता। समाज के फैली रूढ़िवादी सोच से महिलाएं बाहर नहीं आ पाती ओर परिणामस्वरूप महिलाओं को स्वस्थ्य की हानि उठानी पड़ती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पौड़ी व हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधा का आंकलन करना।
2. पौड़ी व हरिद्वार मे महिलाओं की स्वास्थ्य सुविधाओं में कमियों का आंकलन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है तथ्यों का विश्लेषण अध्ययन किया गया हैं अध्ययन के लिए आवश्यकता के अनुसार सरकारी रिपोर्ट व आँकड़ों का प्रयोग शोधछात्रा द्वारा किया गया है।

तालिका–1 में पौड़ी व हरिद्वार दोनो जनपद जनसंख्या का विवरण दिया गया हैं जिसका अवलोकन करने पर स्पष्ट होता हैं कि उत्तराखण्ड राज्य में हरिद्वार जनपद सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती हैं हरिद्वार जनपद देहरादून जनपद के बाद दूसरे सबसे अधिक जनसंख्या वाले जनपद में आता हैं। जनसंख्या की दृष्टि से पौड़ी कोटद्वार जनपद के बाद पूरे राज्य मे दूसरे सबसे कम जनसंख्या वाले जनपद में आता हैं।[7] पौड़ी जनपद में बीते गत दशक मे जनसंख्या दर मे कमी आयी है वर्ष 2001–2011 में पौड़ी में जनसंख्या घनत्व घटकर 131 से 129 हो गया हैं। हरिद्वार व देहरादून जनपद को छोड़कर राज्य के शेष 11 जनपदों मे जनसंख्या वृद्धि में कमी आयी हैं।[8]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका –1 पौड़ी व हरिद्वार जनपद एक दृष्टि में

क्र.स.		पौड़ी		हरिद्वार	
	क्षेत्रफल वर्ग किमी	2369		5329	
		2011	2001	2011	2001
1	जनसंख्या	687,271	697,078	1,890,422	1447187
	पुरूष	326,829	331,061	1005395	776021
	महिला	360,442	366,017	776021	671166
2	साक्षरता प्रतिशत	82.02	77.49	73.43	63.75
	पुरूष	92.71	90.91	81.04	73.83
	महिला	72.60	65.7	64.79	52.1
3	लिंगानुपात	1103	1106	880	865
4	जनसख्या वृद्धि दर	–1.41	3.91	30.63	28.70
5	लिंगानुपात 0–6 वर्ष	904	930	877	862
6	घनत्व प्रति वर्ग किमी	129	131	801	613

स्रोतः– उत्तराखण्ड इयर बुक 2016

हरिद्वार ओर पौड़ी दोनो जनपदो में लिंगानुपात में भारी अन्तर हैं। पौड़ी जनपद में महिलाओ की संख्या पुरूषो की अपेक्षा अधिक हैं। पौड़ी जनपद में महिलाओं की सख्या प्रति हजार पुरूषो पर 1103 हैं जो कि बीते गत दशक से 3 सख्या कम हैं। हरिद्वार जनपद मे लिंगानुपात प्रति हजार पर 880 है जो पिछले दशक से 15 सख्या कम हैं। दोनो जनपदो में लिंगानुपात 223 का अन्तर हैं। दानो ही जनपदो में साक्षरता का प्रतिशत में अन्तर हैं। हरिद्वार जनपद में साक्षरता का औसत 73.43 रहा हैं जबकि पौड़ी जनपद में साक्षरता का प्रतिशत 82. 02 प्रतिशत हैं जो जनपद हरिद्वार से लगभग 10 प्रतिशत ज्यादा हैं। पौड़ी जनपद में महिलाओं की सख्या पुरूषों की अप्रेक्षा अधिक हैं। पौड़ी जनपद में पुरूषों की सँख्या 326829, महिलाओं की सख्या 360,442 है महिलाओं की सख्या पुरूषों की अपेक्षा 33613 अधिक हैं। जबकि हरिद्वार जनपद में महिलाओं की सख्या पुरूषों की अप्रेक्षा कम हैं हरिद्वार जनपद में महिलाओं की सख्या 776021 पुरूषों की संख्या 1105395 हैं। महिलाओं की संख्या पुरूषों की अप्रेक्षा 229,374 कम हैं। पौड़ी जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आयी हैं। वर्तमान में पौड़ी जनपद में जनसंख्या –1.41 हैं जो कि बीते दशक 2001 मे 3.91 रही थी। हरिद्वार जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र गति से बढी हैं वर्तमान में हरिद्वार जनपद में जनसख्या वृद्धि दर 30.63 हैं जो कि बीते दशक में 28.70 रही थी। जनपद हरिद्वार में जनसंख्या बहुत अधिक हैं साथ ही जनसंख्या वृद्धि दर, व घनत्व भी अधिक हैं हरिद्वार की भौगोलिक स्थिति का प्रभाव व अनूकुल परिस्थितियों के कारण उत्तराखण्ड के बाकी पर्वतीय क्षेत्रों मे बसे जनपदो की अप्रेक्षा यहॉ पर अधिक सख्या मे लोग निवास करते हैं। जबकि पौड़ी जनपद के भौगोलिक विषमताओं का प्रभाव के कारण यहॉ पर लोगो पर प्रभाव पड़ा हैं जिस कारण यहॉ पर लोग कम सख्या में निवास करते हैं यहॉ पर अधिकांश व्यक्ति काम ओर रोजगार के लिए दूसरे राज्यों की ओर लगातार पलायन कर रहे हैं।

पौड़ी व हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएं

उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट होता हैं कि दोनो जनपदो में जनसख्या की कमी व अधिकता का प्रभाव वहॉ पर निवास करने वाली महिलाओं को उपलब्ध होने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं पर पड़ा हैं। पौड़ी जनपद में महिलाओं की जनसंख्या पुरुषों की अप्रेक्षा अधिक हैं। तालिका 2 में पौड़ी व हरिद्वार जनपद में महिलाओं के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण दिया गया हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. पौड़ी जनपद में कुल 389 डॉक्टर उपलब्ध हैं। जिसमें की 223 आयुर्वेदिक, 10 होम्योपैथिक, 149 ऐलोपैथिक डॉक्टर उपलब्ध हैं। इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 236 डॉक्टर उपलब्ध हैं जिसमें 103 आयुर्वेदिक, 13 होम्योपैथिक, 8 यूनानी व 112 ऐलोपैथिक पद्धति से उपचार करने डॉक्टर उपलब्ध हैं।
2. पौड़ी जनपद में कुल 141 चिकित्सालय व औषधालय हैं जिनमें से 60 आयुर्वेदिक, 9 होम्योपैथिक, 149 ऐलोपैथिक पद्धति के चिकित्सालय व औषधालय हैं। इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 71 चिकित्सालय है जिसमें कि 25 आयुर्वेदिक, 14 होम्योपैथिक, 4 यूनानी व 28 ऐलोपैथिक प्रकार के चिकित्सालय उपलब्ध हैं।
3. पौड़ी जनपद में स्थित चिकित्सालयों में आने वाले बीमारी महिलाओं के लिए चिकित्सालय में कुल 1853 बिस्तर उपलब्ध हैं जिसमें होम्योपैथिक ओर यूनानी चिकित्सालयों मे एक भी बिस्तर उपलब्ध नहीं हैं। इसी क्रम में हरिद्वार जनपद में कुल स्थित चिकित्सालयों में आने वाले बीमार महिलाओं के लिए कुल 1843 बिस्तर उपलब्ध हैं। जिसमें कि आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में 424, होम्योपैथिक में 0, यूनानी में 4 व ऐलोपैथिक में 1415 बिस्तर उपलब्ध हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका 2– हरिद्वार व पौड़ी जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधायें

	पौड़ी	वर्ष 2016	हरिद्वार	वर्ष 2016
आयुर्वेदिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	60	चिकित्सालय एवं औषधालय	25
	डॉक्टरो की सख्या	223	डॉक्टरो की सख्या	103
	उपलब्ध बैड	219	उपलब्ध बैड	424
होम्योपैथिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	9	चिकित्सालय एवं औषधालय	14
	डॉक्टरो की सख्या	10	डॉक्टरो की सख्या	13
	उपलब्ध बैड	––	उपलब्ध बैड	0
यूनानी				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	––	चिकित्सालय एवं औषधालय	4
	डॉक्टरो की सख्या	––	डॉक्टरो की सख्या	8
	उपलब्ध बैड	––	उपलब्ध बैड	4
ऐलोपैथिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	72	चिकित्सालय एवं औषधालय	28
	डॉक्टरो की सख्या	149	डॉक्टरो की सख्या	112
	उपलब्ध बैड	1634	उपलब्ध बैड	1415

स्रोत–सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी, हरिद्वार, 2016

4. तालिका 3 में पौड़ी व हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं का विवरण दिया गया हैं जिससे स्पष्ट होता हैं कि जनपद पौड़ी में 12 सामुदायिक केन्द्र स्थापित हैं इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 8 सामुदायिक केन्द्र स्थापित किये गये हैं।
5. पौड़ी जनपद मे 49 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र की स्थापन राज्य द्वारा कि गई हैं इसी क्रम में हरिद्वार जनपद में मात्र 13 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द की स्थापना राज्य द्वारा कि गई हैं।
6. दोनो जनपदो में स्वास्थ्य सुविधा सम्बन्धी व जानकारी देने वाली सस्थाओं की सख्या में भारी अन्तर हैं। पौड़ी जनपद में महिला व बच्चों के स्वास्थ्य लाभ के लिए कुल 239 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द हैं तो हरिद्वार जनपद में कुल 165 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द ही उपलब्ध हैं।

तालिका 3– सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तथा परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र/उपकेन्द

क्र.स.	वर्ष 2015–16	पौड़ी जनपद	हरिद्वार जनपद
1	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द	12	8
2	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द	49	13
3	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द	239	165

स्रोत– सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी, हरिद्वार, 2016

परिणाम

उपरोक्त सभी आंकड़ो व तथ्यों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता हैं, कि दोनो जनपद विपरित भौगोलिक संरचना में स्थित हैं। जिसका प्रभाव यहां पर निवास करने वाली महिलाओं के दैनिक जीवन व स्वास्थ्य सुविधाओ पर निश्चित रुप से पड़ा हैं पौड़ी जनपद में जनसंख्या हरिद्वार जनपद की अप्रेक्षा कम हैं; कम जनसंख्या के लिए स्वस्थ्य सुविधाएं हरिद्वार जनपद की अपेक्षा तुलनात्मक दृष्टि से संख्या में अधिक हैं। जबकि शहर में स्थित होनो के कारण हरिद्वार जनपद में जनसख्या अधिक ओर महिलाओं की सख्या भी पौड़ी जनपद की अप्रेक्षा लगभग 2 लाख अधिक हैं, अधिक जनसंख्या होने के कारण यहां पर सभी को पर्याप्त सख्या मे स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान कर पाना राज्य के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। दोनो जनपदो में उपलब्ध स्वस्थ्य सुविधाओ का अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम दिखाई देते हैं।

1. पौड़ी जनपद में 926 महिलाओं पर 1 डॉक्टर उपलब्ध हैं। जबकि हरिद्वार में 2388 महिलाओं की जनसंख्या में 1 डॉक्टर उपलब्ध हैं।
2. पौड़ी जनपद में चिकित्सालय की संख्या हरिद्वार जनपद की अप्रेक्षा अधिक हैं। पौड़ी में जहा 141 चिकित्सालय उपलब्ध हैं तो हरिद्वार जनपद में इसके आधे मात्र 71 चिकित्सालय हैं।
3. पौड़ी जनपद में चिकित्सालयों में 194 महिलाओं पर 1 बिस्तर की सुविधा उपलब्ध हैं। तो हरिद्वार जनपद में 421 महिलाओं पर 1 बिस्तर की सुविधा उपलब्ध हैं।
4. पौड़ी जनपद में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की सख्या 12 हैं जबकि हरिद्वार जनपद में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्दों की सख्या मात्र 8 हैं।

5. पौड़ी जनपद में महिलाओं के लिए 49 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र हैं तो इसकी अपेक्षा हरिद्वार जनपद में पौड़ी जनपद के 1/3 भाग मात्र 13 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र की सुविधा उपलब्ध हैं।
6. पौड़ी जनपद में 239 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द का संचालन किया जा रहा हैं तो वही हरिद्वार जनपद मे मात्र 165 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्दों की सुविधा लोगो का उपलब्ध है पौड़ी जनपद में हरिद्वार की अपेक्षा 74 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द अधिक हैं।
7. पौड़ी जनपद की अपेक्षा हरिद्वार जनपद की महिलाओं को डाक्टरों की उपलब्धता की कमी का सामना अधिक करना पड़ता हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त दोनो जनपदो में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं के आंकड़ों का आकलन करने पर स्पष्ट होता हैं कि दोनों जनपदों में महिलाओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं मे भारी अन्तर हैं। पौड़ी जनपद पर्वतीय क्षेत्र मे स्थित होने के बावजूद यहां पर महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उचित मात्रा में उपलब्ध हैं। हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वस्थ्य सुविधाओं की सुची से स्पष्ट होता है कि हरिद्वार जनपद मे प्रति डॉक्टर महिलाओ की सख्या पौड़ी जनपद मे प्रति डॉक्टर से लगभग तीन गुना अधिक हैं। साथ ही हरिद्वार जनपद में पौड़ी जनपद की तुलना में उपलब्ध चिकित्सालयों की संख्या भी कम हैं। जिसके परिणामस्वरुप हरिद्वार जनपद के चिकित्सालयों में उपचार हेतु महिलाओं की संख्या अधिक हैं। साथ ही महिलाओं को उपचार के लिए डॉक्टरों से मिलने पौड़ी जनपद की अपेक्षा ज्यादा समय तक प्रतिक्षा करनी पड़ती हैं। पौड़ी जनपद मे महिलाओं को चिकित्सा सुविधा पाने के लिए ज्यादा समय खर्च नहीं करना पड़ता ना ही चिकित्सालयों के ज्यादा चक्कर लगने पड़ते हैं। क्योंकि पौड़ी जनपद मे हरिद्वार जनपद की अपेक्षा अधिक संख्या में चिकित्सक व चिकित्सालय हैं। हरिद्वार जनपद में डॉक्टरो के पास आने वाली महिला मरीजो की संख्या भी अधिक होती हैं जिस कारण डॉक्टर द्वारा महिलाओं को अधिक समय देना सभंव नहीं हैं साथ ही डॉक्टर द्वारा अधिक महिलाओं को देख पाना भी सभंव नही हो पाता। परिणामस्वरुप महिलाओं को चिकित्सालयों के से अधिक चक्कर लगाने पड़ते हैं। अतः राज्य द्वारा इस गभीर समस्या पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं।

सुझाव

उपरोक्त दोनो क्षेत्रों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं में अन्तर को कम करने का प्रयास केन्द्र व राज्य सरकारे के द्वारा किया जाना चाहिए। दोनों ही क्षेत्रों की अपनी–अपनी विभिन्नताऐं हैं अत इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक हैं। दोनो ही जनपदों में महिलाओं के लिए चिकित्सा सुविधाओं को और बढ़ाये जाने की आवश्यकता हैं विशेष रूप से हरिद्वार जनपद में महिलाओं के लिए चिकित्सालय, ओर डॉक्टर की सख्या बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता हैं। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा हरिद्वार जनपद की महिलाओं के स्वस्थ्य सुविधा हेतु अधिक प्रयास करने की आवश्यकता हैं। दानो जनपदों की महिलाओं को उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं में समानता लाने के प्रयास किये जाने चाहिए। किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों की भौगोलिक विषमता भी महिलाओं के जीवन यापन को प्रभावित करती हैं। जिसके लिए भी शासकीय नियोजन की आवश्यकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0–335*
2. *नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0–335*
3. *http://hindi.indiawater portal.org*
4. *सेमवाल गोविन्दा नन्द, उत्तरांचल नगर और नगर पालिकाए, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0– 333*
5. *सामाजार्थिक समीक्षा, जनपद हरिद्वार वर्ष 2013–14*
6. *सेमवाल,गोविन्दा नन्द, उत्तरांचल नगर और नगर पालिकाए, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0–279*
7. *सेमवाल गोविन्दा नन्द, उत्तरांचल नगर और नगर पालिकाए, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0– 333*
8. *नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0–50*